आचार्य विमलसूरि

जीवन-परिचय : प्राकृत भाषा के चरित-काव्य के रचयिता के रूप में विमलसूरि पहले आचार्य कवि हैं। आचार्य विमलसूरि ने ग्रन्थ के अन्त में अपनी प्रशस्ति दी है, उनके अनुसार आचार्य विमलसूरि आचार्य राहु के प्रशिष्य, विजय के शिष्य और 'नाइल कुल' के वंशज थे।

नाइलकुल के सम्बन्ध में मुनि कल्याणविजय का अनुमान है कि नाइलकुल, नागिलकुल अथवा नगेन्द्र कुल है। इसका अस्तित्व 12वीं शताब्दी तक प्राप्त होता है। 12वीं से 15वीं शताब्दी तक यह कुल नगेन्द्र-गच्छ के नाम से प्रसिद्ध रहा है। इस गच्छ के आचार्य एक सम्प्रदाय का अनुकरण नहीं करते थे। इनके विचार उदार रहते थे। यही कारण है कि विद्वानों ने इन्हें यापनीय संघ का अनुयायी माना है।

आचार्य विमलसूरि का समय ई. सन् चौथी शताब्दी के लगभग माना जाता है।

रचना-परिचय : आचार्य विमलसूरि की एकमात्र रचना 'पउमचरिय' मानी जाती है—

1. पउमचरिय : पउमचरिय में सम्पूर्ण रामकथा का समावेश सात अधिकारों और 118 अध्यायों में किया है।

यह ग्रन्थ दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही सम्प्रदायों में मान्य है। इस ग्रन्थ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें सभी पात्रों जैसे—रावण, कैकेयी, मन्दोदरी आदि का उदात्त चरित्र अंकित किया है।

यह प्राकृत भाषा का सर्वप्रथम चरित महाकाव्य है। इसकी भाषा महाराष्ट्रीय प्राकृत है, जिस पर यत्र-तत्र अपभ्रंश भाषा का भी प्रभाव है। भाषा में प्रवाह और सरलता है।